इकाई 5 इरविंग गॉफमैनः स्व का प्रस्तुतीकरण*

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 स्व एवं दैनिक जीवन

5.3 गॉफमैनः जीवनकाल

5.3.1 जीवन परिचय

5.3.2 सामाजिक एवं बौद्धिक सन्दर्भ

5.4 रूपक के तौर पर नाटकीयता

5.5 स्व प्रस्तुतीकरण

5.5.1 अभिनय (प्रदर्शन)

5.5.2 प्रभाव प्रबंधन

5.5.3 भौतिक व्यवस्थाः मंच

5.6 सारांश

5.7 सन्दर्भ

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप सक्षम होंगे कि–

- सामाजिक संवाद प्रक्रिया में नाटकीयता को वर्णित कर सकें;
- मंच और नेपथ्य क्या हैं, यह बता सकें
- प्रभाव प्रबंधन पर चर्चा कर सकें।

5.1 प्रस्तावना

पिछली इकाइयों में हमने जाना कि किस तरह जॉर्ज हरबर्ट मीड ने सामाजिक संवादों (प्राथमिक तौर पर संचार प्रक्रिया के रूप में) के जरिये आत्म (स्व) को विकसित इकाई के रूप में समझने का प्रयास किया। इरविंग गॉफमैन दैनिक जीवन में विमर्श प्रक्रिया की गहराई में जाकर इसे और आगे बढ़ाते हैं। संवाद प्रक्रिया का अध्ययन समाजशास्त्रीय सिद्धांत का केंद्रबिंदु माना जाता है। इरविंग गॉफमैन को अकसर संवाद प्रक्रिया का सबसे रचनात्मक सिद्धांतकार माना जाता है। संवाद सिद्धांतकार के तौर पर उनकी प्राथमिक रुचि संवाद के अनुक्रम को समझने की थी जिसमें व्यक्तियों के बीच आमने–सामने या रूबरू संवाद शामिल है। बातचीत या संवाद की प्रक्रिया भले ही सूक्ष्म होती है, लेकिन यह सामाजिक वास्तविकता के एक अलग दायरे का निर्माण करती है और इसके कार्य करने के अपने गतिमान

*यह इकाई डॉ प्रवति दलुआ लिखित।

तरीके होते हैं। बाजार, राजनीति, धर्म, स्तरीकरण जैसी जटिल प्रणालियों की वृहद घटनाओं को भले ही सूक्ष्म स्तर पर नहीं समझाया जा सकता है, फिर भी यह सामाजिक वास्तविकताओं को एक निश्चित तरीके से समझने में मदद कर सकती हैं, क्योंकि ये प्रक्रियाएं उन लोगों द्वारा बनती हैं जो संवाद या बातचीत की प्रक्रिया में शामिल होते हैं। हालांकि, वृहद घटनाएं हमेशा हमारी संवाद या बातचीत को बाधित अथवा निश्चित ढांचे में ढालने का प्रयास करती हैं, लेकिन फिर भी वास्तविक दुनिया के तौर पर जो सामने आता है वह कई मायनों में प्रतिनिधित्व होता है जो व्यक्तियों की गतिशील क्रियाओं के जरिये प्राप्त होता है क्योंकि वे विभिन्न संवादात्मक परिस्थितियों में एक–दूसरे से सरोकार रखते हैं। इस इकाई के परिचय में हमने गॉफमैन के प्राथमिक विचारों के बारे में संक्षेप में जाना, लेकिन इसे पूरी तरह समझने के लिये यह आवश्यक है कि हम उनकी जीवनयात्रा के बारे में जानें और समझें कि वह कैसे प्रेरित हुये और कैसे लेखन किया। इसी तरह बौद्धिक वातावरण किसी की विचार प्रक्रिया पर बड़ा असर डालता है। इकाई के भाग 5.3 में हम इन पहलुओं के बारे में जानेंगे और अगले भागों में हम उनके केंद्रीय विचार के विभिन्न तत्वों के बारे में समझेंगे।

5.2 स्व एवं दैनिक जीवन

इरविंग गॉफमैन की 1959 में प्रकाशित विख्यात पुस्तक 'द प्रजेंटेशन ऑफ सेल्फ इन एवरीडे लाइफ' मानवीय दुनिया की रंगमंच और मानवों की रंगमंचीय कलाकारों से तुलना के जरिये संवाद प्रक्रिया के विश्लेषण को विस्तार से वर्णित करती है। वह रूपक के तौर पर नाटक के विचार का उपयोग करते हैं और इसके जरिये यह समझने–समझाने का प्रयास करते हैं कि हम कैसे विभिन्न भूमिकाओं का निर्वहन करते हैं। शेक्सपीयर के नाटक 'एज यू लाइक इट' की पंक्तियां– 'यह पूरी दुनिया एक मंच है और सभी पुरुष–महिलाएं केवल भूमिकाकार हैं, उनके अपने प्रवेश और निकास द्वार हैं और एक ही व्यक्ति कई भूमिकाओं का निर्वहन करता है,' दैनिक सन्दर्भ में गॉफमैन की स्व की समझ के दृष्टिकोण को प्रदर्शित करती हैं। अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिये लोग अपनी उपस्थिति और शारीरिक व्यवस्था को इस तरह नियंत्रित करते हैं कि जहां वे अपने वास्तविक व्यवहार और हावभाव के साथ प्रदर्शन कर सकें। उदाहरण के लिय उन प्रयासों पर ध्यान दीजिये जो कोई वक्ता श्रोताओं को संबोधित करने से पहले करता है। वे लोगों के सामने जाने से पहले पूर्वाभ्यास करते हैं। इसी तरह का पूर्वाभ्यास संगीतकारों और खिलाड़ियों द्वारा भी अपने प्रदर्शन से पहले किया जाता है।

गॉफमैन के अनुसार सभी सामाजिक अवसरों की नाटकीय प्रवृत्ति होती है। व्यक्ति हमेशा दूसरे लोगों पर अच्छा प्रभाव डालने के प्रयास करते हैं, क्योंकि व्यक्ति की सामान्य उपस्थिति और समग्र व्यवहार उस पहचान को पाने में प्रासंगिक होते हैं, जो वे पाना चाहते हैं। उदाहरण के लिये, कक्षाओं में होने वाली चर्चाओं में छात्र अकसर खुद को ज्ञानवान और स्थिर दिखाने का प्रयास करते हैं। इसी तरह अदालत में किसी मुकदमे की पैरवी करते वकील खुद को आत्मविश्वास से लबरेज दिखाते हैं और नौकरीपेशा लोग तब स्वयं को व्यस्त दिखाने की कोशिश करते हैं, जब उनके वरिष्ठ निरीक्षण कर रहे हों। वह मानते हैं कि स्व किसी संवादात्मक परिस्थिति में 'अभिनेता' और उसके दर्शकों या श्रोताओं के बीच नाटकीय संवाद का परिणाम होता है। वह कहते हैं– 'प्रदर्शित किये जाने वाले किसी दृश्य के नाटकीय प्रभाव से ही स्व उत्पन्न होता है।' (गॉफमैन 1959:253)

संक्षेप में, गॉफमैन वृहद संरचनाओं और इनके स्व पर पड़ने वाले असर पर ध्यान नहीं देते हैं, न ही वह स्व की अनिवार्य प्रकृति को देखते हैं, लेकिन वास्तव में यह बताते हैं कि लोगों द्वारा स्व को निरन्तर उनके श्रोताओं–दर्शकों के अनुरूप बनाया–बदला जाता है। समाज द्वारा हमें दी गयी भूमिकाओं सिर्फ दी नहीं जाती हैं, बल्कि कर्ताओं (अभिनेताओं) और लोगों द्वारा सक्रिय रूप से इनका निर्वहन किया जाता है। 1959 में प्रकाशित इरविंग गॉफमैन की पुस्तक 'द प्रजेंटेशन ऑफ सेल्फ इन एवरीडे लाइफ' सांसारिक बातचीत में प्रक्रिया तथा अर्थों के विश्लेषण को विस्तार से व्याख्यायित करती है। शिकागो स्कूल के पूर्व छात्र के तौर पर गॉफमैन प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी दृष्टिकोण से लिखते हैं, जिसमें संवाद या विमर्श प्रक्रिया के घटकों के गुणात्मक विश्लेषण पर जोर दिया गया है। 'द प्रजेंटेशन ऑफ सेल्फ इन एवरीडे लाइफ' ने उनके नाटकीयता दृष्टिकोण की बुनियाद रखी, जिसे आगे चलकर उन्होंने 1961 में 'असाइलम', 1964 में 'स्टिग्मा', 1979 में 'फ्रेम एनालिसिस' और 1981 में 'फॉर्म्स ऑफ टॉक' में भी प्रयोग किया।

5.3 गॉफमैनः जीवनकाल

सूक्ष्म–समाजशास्त्रीय विश्लेषण और अपरंपरागत विषयवस्तु पर ध्यान केंद्रित करते हुये गॉफमैन ने व्यक्तिगत पहचान, सामूहिक संबंधों, पर्यावरण के प्रभाव, सूचना के संवादात्मक अर्थ तथा प्रक्रियाओं पर गहराई से नजर डाली। उन्होंने उन तरीकों पर ध्यान केंद्रित किया, जिनके जरिये लोग संचार प्रक्रिया में सामाजिक वास्तविकता को किसी ढांचे में ढालते हैं या परिभाषित करते हैं। उनका दृष्टिकोण सामाजिक संवाद और व्यक्ति के मनोविज्ञान पर नये सिरे से अंतर्दृष्टि डालता है। उनके कार्यों के बारे में और जानने से पहले हम उनके जीवन, सामाजिक सन्दर्भों और उनके लेखन पर बौद्धिक प्रभाव के बारे में जानेंगे।

5.3.1 जीवन परिचय

गॉफमैन का जन्म 1922 में कनाडा के मानविल, एल्बर्टा में मैक्स गॉफमैन और ऐनी गॉफमैन की संतान के रूप में हुआ। गॉफमैन यूक्रेनीयहूदी थे और उनका परिवार 20वीं सदी में यहूदियों के रूस से कनाडा पलायन के दौरान यहां आ गया था। गॉफमैन की विद्यालयी शिक्षा विनीपेग के सेंट जॉन्स टेक्निकल हाईस्कूल से हुयी, जिसके बाद वे उच्च शिक्षा के लिये मानीटोबा विश्वविद्यालय पहुंचे। जॉन ग्रियरसन द्वारा स्थापित नेशनल फिल्म बोर्ड ऑफ कनाडा के जरिये फिल्म

उद्योग से जुड़ने के लिये उन्होंने विश्वविद्याल छोड़ दिया। इसी दौरान गॉफमैन की मुलाकात डेनिस रॉग से हुयी जो सुविख्यात उत्तरी अमेरिकी समाजशास्त्री थे। डेनिस से हुयी मुलाकात ने उन्हें टोरंटो विश्वविद्यालय जाने को प्रेरित किया, जहां से उन्होंने 1945 में समाजशास्त्र एवं मानवविज्ञान में बीए किया। इसके बाद वह शिकागो विश्वविद्यालय आ गये और 1949 में एमए समाजशास्त्र तथा 1953 में पीएचडी उपाधि हासिल की। शिकागो विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान गॉफमैन ने शेटलैंड द्वीपों पर शोधकार्य किया। इस शोधकार्य ने ही उन्हें अपनी पहली पुस्तक 'द प्रजेंटेशन ऑफ सेल्फ इन एवरीडे लाइफ' लिखने को प्रेरित किया। शिकागो विश्वविद्यालय से शिक्षा पूर्ण करने के बाद गॉफमैन 1954 से 1957 तक बेथेस्दा के नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर मेंटल हेल्थ में रिसर्च फेलो रहे। यहां सहभागी परीक्षण ने उन्हें मानसिक रोगों पर निबंध तथा चर्चित लेख 'टोटल इंस्टीट्यूशन्स' लिखने की प्रेरणा दी जिन्हें मिलाकर उन्होंने दूसरी पुस्तक 'असाइलमः ऐसेज ऑन द सोशल सिचुएशन ऑफ मेंटल पेशेंट्स एंड अदर इनमेट्स' लिखी। बाद में गॉफमैन बर्कले में समाजशास्त्र विभाग में प्रोफेसर हुये, यहां से वह पेनसिल्वेनिया विश्वविद्यालय चले (Source: Fair use, https://en.wikipedia.org/w/index.php?curid=8959018) गये, जहां वह 1982 में अपने निधन तक कार्यरत रहे।

5.3.2 सामाजिक एवं बौद्धिक सन्दर्भ

गॉफमैन उन लोगों की पीढ़ी के लिये प्रभावी व्यक्तित्व थे, जिन्होंने शक्तियों की वृहद संरचनाओं पर सवाल उठाने और चुनौती देना प्रारंभ किया। 1960 के दौर में अमेरिका में विभिन्न मुद्दों के साथ नस्ली भेदभाव के विरोध में अभियान तेज हो गये थे। यह वह समय था, जब अफ्रीकी–अमेरिकी शांतिवादी कार्यकर्ता मार्टिन लूथर किंग जूनियर मतदान के अधिकार, भेदभाव समाप्त करने, श्रम अधिकारों और अन्य नागरिक अधिकारों को लेकर चल रहे आंदोलनों का नेतृत्व कर रहे थे। विभिन्न विश्वविद्यालयों (खासतौर पर उस बर्कले विश्वविद्यालय में, जहां गॉफमैन प्रोफेसर थे) में छात्रों ने विश्वविद्यालय प्रशासन के पारंपरिक अधिकरण को चुनौती दी।

विभिन्न विद्वानों और समाजशास्त्रियों ने संरचनाओं की समावेशी प्रकृति पर यह सवाल उठाने शुरू किये कि व्यक्ति वास्तव में परिस्थितियों के अनुरूप अर्थों की वृहद और प्रतीकात्मक संरचनाओं की व्याख्या तथा हेरफेर करते हैं। प्रतीकात्माक अंतःक्रियावाद के प्रमुख समर्थक हरबर्ट ब्लूमर सांख्यिकीय सामान्यीकरण के विरोधी थे, क्योंकि उनका मानना था कि वास्तव में इसका कोई लाभ नहीं होता है। उन्होंने सवाल उठाया कि वर्ग (क्लास) कहां है, क्या इसे देखा जा सकता है? वह तर्क देते हैं कि यह सिर्फ तभी स्पष्ट हो सकता है जब वास्तविक व्यवस्था में कारकों द्वारा वास्तविक निरूपण और व्याख्या की जाये। ब्लूमर उन लोगों में से एक थे, जिन्होंने गॉफमैन को प्रभावित किया। जैसाकि आपने पिछली इकाइयों में पढ़ा होगा कि 'द सिंबोलिक इंटीग्रेशनिस्ट स्कूल' ने संवाद की सूक्ष्म प्रक्रिया (जिसमें संचार की मुख्य भूमिका होती है) की ओर ध्यान आकृष्ट करने में अहम भूमिका निभायी। लोग अपने सामाजिक सन्दर्भ के भीतर साझा समझ के दायरे में ही कार्य करते हैं। गॉफमैन के लेखन में भी यही विचार स्पष्ट होता है। गॉफमैन प्रायः लोगों के बीच पारस्थितिक संवाद के विश्लेषण में प्रतीकात्मक संवाद के विचार से जुड़े नजर आते

हैं। हालांकि, गैरी ऐलन फाइन और फिलिप मैनिंग के अनुसार गॉफमैन कभी भी अन्य सिद्धांतकारों के साथ गंभीर विमर्श में शामिल नहीं हुये। यद्यपि गॉफमैन को सामान्यतः समाजशास्त्र के प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद विचार से जोड़ा जाता है, लेकिन वह स्वयं को इसका प्रतिनिधि नहीं मानते थे। इसीलिये फाइन और मैनिंग इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि– 'वह समाजशास्त्र के किसी विशेष विचार में आसानी से फिट नहीं होते हैं।' (फाइन और मैनिंग, 2003:34) हम देखते हैं कि अपनी समाज की अवधारणा और इस अवधारणा को प्रदर्शित करने वाली परंपराओं को लेकर वह दुर्खेम के सन्दर्भ लेते हैं, फिर भी गॉफमैन के लिये दैनिक रीतियां उस वृहद सामाजिक संरचना को प्रदर्शित करने का जरिया थीं, जो व्यक्ति के लिये सन्दर्भ बन जाती है। गॉफमैन संरचनाओं के प्रतिनिधित्व के सदृश 'पिक्चर फ्रेम' का उपयोग करते हैं जो लोगों के सन्दर्भों (उनके दैनिक जीवन के अनुभव) को साथ रखता है और तस्वीर के रूप में प्रदर्शित करता है।

बोध प्रश्न 1

1. गॉफमैन के सिद्धांत निर्माण में रूपकों की क्या महत्ता है? संक्षेप में बतायें

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2. स्व का नाटकीय प्रस्तुतीकरण क्या है? संक्षेप में उत्तर दें

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5.4 रूपक के तौर पर नाटकीयता

अंतःक्रिया या संवाद प्रक्रिया को समझाने के लिये गॉफमैन नाटकीयता को रूपक के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। यही वजह है कि उनके कार्य को 'नाटकीय' नाम दिया गया है। यहां हम स्वयं से प्रश्न करते हैं कि हम किसी नाटक या रंगमंच में क्या देखते हैं? इस रूपक के बारे में जरा विचार करें। हम पाते हैं कि रंगमंच में मंच, कलाकार, श्रोता–दर्शक, ड्रेसिंग रूम, नेपथ्य आदि नजर आते हैं। इसी तरह गॉफमैन समाज को रंगमंच या सामाजिक मंच की तरह देखते हैं, जहां हम सभी

अपनी प्रस्तुतियां देते हैं। गॉफमैन ने इसे नाटकीय विश्लेषण कहा है। यह रूपकीय समझ हमें समाज और सामाजिक अंतःक्रियाओं को एक रोचक तरीके से जानने का तरीका बताती है।

दैनिक जीवन में लोगों को किसी कलाकार की तरह देखना हमें कुछ हद तक कृत्रिम लग सकता है, लेकिन गॉफमैन की सामाजिक वास्तविकता की समझ के लिये यह तरीका सही है। दूसरों से विमर्श–संवाद के दौरान हम उन तरीकों को नियंत्रित करने की कोशिश करते हैं, जिनके जरिये दूसरे हमें समझ पाते हैं और स्वयं को दूसरों की नजर में सकारात्मक दिखाने के लिये हम अलग–अलग सन्दर्भों में अपनी प्रस्तुति को थोड़ा बदल या झुका लेते हैं। हम सबसे पहले अपने परिवार में छोटी आयु से ही यह करना सीखते हैं जो आगे दोस्तों, रिश्तेदारों और अन्य के साथ जुड़ते हुये आगे बढ़ता जाता है। समग्र रूप से इस प्रक्रिया को 'नाटकीय स्व प्रस्तुतीकरण' कहा जाता है, जिसका अर्थ यह है कि कोई व्यक्ति दूसरों के सामने अपनी छवि और प्रभाव को नियंत्रित करने का प्रयास करता है। हालांकि, उनके सिद्धांत की व्याख्याओं में महत्वपूर्ण अस्पष्टताएं रही हैं (रैनसम, 2020: 182–85) लेकिन सामान्यतः हम समझ सकते हैं कि गॉफमैन के कार्य में सांस्कृतिक लिपियों–कथानकों, मानक नियमों और उन तरीकों (जिनके जरिये कोई व्यक्ति अपने प्रभाव को प्रबंधित करता है व अपने हाव–भाव, रूपकीय उपकरणों–साधनों के जरिये अपनी भूमिका का निर्वहन करता है) पर ध्यान केंद्रित किया गया है जो बताते हैं कि हम सामाजिक होते हुये अपने दैनिक जीवन में क्या और क्यों करते हैं। उनके सिद्धांत में भी मंच के विचार का सन्दर्भ है, जो बताता है कि कैसे व्यक्ति दैनिक जीवन में अंतःक्रियात्मक, विमर्श परिस्थितियों में भौतिक स्थान और मंचीय व्यवस्था से जुड़ता है और इससे रंगमंच जैसा माहौल बन जाता है। इस माहौल में दैनिक परिस्थितियों में एक प्रस्तुति के रूप में किया जाने वाला विमर्श–संवाद वास्तविकता की भावना बनाता है, भले ही यह समग्र नहीं होता, लेकिन छोटे तौर पर ही सूक्ष्म सामाजिक वास्तविकताओं के निर्माण में योगदान करता है।

5.5 स्व प्रस्तुतीकरण

गॉफमैन का नाटकीय दृष्टिकोण इस बुनियादी तर्क पर आाधारित है कि व्यक्ति जानबूझकर या सोच–समझकर ऐसे हाव–भाव प्रदर्शित करते हैं जो दूसरों को यह जानकारी दे सके कि उन्हें किस तरह प्रतिक्रिया देनी है। हाव–भाव के इस प्रदर्शन के जरिये हम परिस्थिति को परिभाषित करते हैं ताकि हमारा सामाजिक जीवन सहयोगी तरीके से चले। परिस्थितियों की ऐसी परिभाषाओं के निर्माण के जरिये लोग अपने दैनिक जीवन में प्रस्तुतियों की एक शृंखला से जुड़ जाते हैं। ये प्रस्तुतियां हाव–भाव के जरिये पूरी की जाती हैं तो व्यक्ति एक विशिष्ट तरीके से स्व को प्रस्तुत कर सके और अपने जीवन में अभीष्ट–इच्छित व्यवहार पा सके, इन्हें नाटकीय मॉडल में प्रस्तुतियों की शृंखला कहा गया है। अब जरा इस इकाई का ही उदाहरण लें, यहां मैं एक ऐसी प्रस्तुति में संबद्ध हूं, जिसमें मैं आपको न सिर्फ गॉफमैन के बारे में आपको जानकारी दे रहा हूं, बल्कि इस विषय पर दी जाने वाली सूचनाओं को लेकर आत्मविश्वास के जरिये अपने बारे में भी आपको बता रहा हूं (कि मैं दूसरों के सामने अपने विचार रख पाने में सक्षम हूं)।

इस तरह लोग जो भूमिका निभाते हैं वे वास्तव में ऐसी छवियां होती हैं जो लोग अपने बारे में बनवाना चाहते हैं और यहां कथानक वह विषयवस्तु है, जिसके जरिये हम दूसरों से संपर्क–विमर्श कर पाते हैं। भूमिका का निर्वहन इस तरह से किया जाता है कि दर्शकों–श्रोताओं (जो हमारी प्रस्तुति के प्रेक्षक होते हैं) में हमारी भूमिका और कार्यों पर विश्वास कायम हो सके। ये भूमिकाएं अनायास महत्वहीन नहीं हैं, बल्कि वे महत्वपूर्ण निर्णय हैं जो लोग अपने दैनिक जीवन में लेते हैं। कपड़े पहनने के तरीकों से लेकर संवाद के दौरान शारीरिक हावभाव तक इन निर्णयों की लंबी शृंखला होती है। उदाहरण के लिये, किसी सामाजिक या सामान्य कार्यक्रम के दौरान लोग यह विचार करते और महत्वपूर्ण निर्णय लेते हैं कि वे कार्यक्रम के अनुरूप 'कैजुअल' कपड़े पहनें या 'फॉर्मल' और यह भी कि कार्यकम में किस तरह का मेकअप करके जाना उचित रहेगा। इसके अलावा वे यह भी विचार करते हैं कि किस तरह के हावभाव उचित रहेंगे। हमारी रुचियां अपरिहार्य रूप से इसे प्रभावित करती हैं कि हम जो भी कह रहे हैं, वह दूसरों द्वारा किस तरह समझा–देखा जायेगा। नजरें मिलाकर, मुस्कुराते हुये किसी से बात करना या तारीफ करना हमारी बात को और भी अधिक प्रभावी बना देता है। ऐसा करने पर लोग हमारी तारीफ को वास्तविक मानकर स्वीकार करते हैं और तारीफ के दौरान विचलित नहीं होते। इन अंतर्निहित तत्वों पर विमर्श हमें दैनिक जीवन में लोगों की प्रस्तुतियों पर नाटकीय विमर्श से जुड़ी गतिशीलता को समझने में मददगार हो सकता है। इकाई के अगले हिस्सों में हम इन मूल तत्वों के बारे में विस्तार से जानेंगे।

बॉक्स 5.1

मुख्य उद्धरणः इरविंग गॉफमैन, द प्रजेंटेशन ऑफ सेल्फ इन एवरीडे लाइफ (1959)

यह स्व स्वयं व्यक्ति से उत्पन्न नहीं होता, बल्कि उसकी गतिविधियों–क्रियाओं के समग्र दृश्य से उत्पन्न होता है। यह स्थानीय घटनाओं की उस विशेषता द्वारा उत्पन्न होता है, जिसे देखने वालों द्वारा व्याख्यायित किया जा सकता है। अच्छे ढंग से मंचित और प्रस्तुत दृश्य दर्शकों–श्रोताओं के बीच अपनी भूमिका के संबंध में स्व को स्थापित करने या थापने का काम करता है, लेकिन यह थोपना, यह स्व दृश्य का परिणाम होता है, उसका कारण नहीं। एक प्रस्तुत चरित्र के रूप में स्व मौलिक और विशिष्ट स्थिति वाला (जिसका मूल भाग्य जन्म लेना, परिपक्व होना और मरना) नहीं होता, बल्कि यह वह नाटकीय प्रभाव होता है जो प्रस्तुत दृश्य से उत्पन्न होता है और इसका मूल मुद्दा या वास्तविक चिंता यह होती है कि इसे श्रेय मिलेगा या हीन समझा जायेगा (गॉफमैन, 1959:223)

5.5.1 अभिनय (प्रदर्शन)

किसी व्यक्ति द्वारा पर्यवेक्षकों के विशेष समूहों के सामने और दूसरों पर कुछ विशेष प्रभाव डालने के उद्देश्य से किये जाने वाले कार्यों को गॉफमैन ने अभिनय या प्रदर्शन नाम दिया है। वह बताते हैं कि नाटकीयता में अभिनय का मूल तत्व प्रभाव प्रबंधन की रणनीति है। यह स्थिति की एकल परिभाषा के रखरखाव की ओर उन्मुख होती है। उनके अनुसार– 'सामाजिक अंतःक्रियाओं की संरचना में स्थिति

की एकल परिभाषा का रखरखाव मूल कारक है, इस परिभाषा का तात्पर्य अभिव्यक्ति से है यानी यह तय करना कि व्यवधानों–बाधाओं के बावजूद अभिव्यक्ति कायम रही।' (गॉफमैन 1959:225)

5.5.2 प्रभाव प्रबंधन

प्रभाव प्रबंधन गॉफमैन की धारणा का केंद्रबिंदु है। यह मुख्यतः इस ओर उन्मुख होती है कि दूसरे लोगों से संवाद के दौरान उठ सकने वाली अनपेक्षित गतिविधियों की शृंखलाओं से संरक्षण दे सकें। यहां अनपेक्षित गतिविधियों का अर्थ गैरइरादतन हावभव, अनुचित हस्तक्षेप, कोई गलत कदम या जानबूझकर किसी परिस्थिति का निर्माण कर देना है। गॉफमैन के अनुसार खुद को दूसरों के सामने पेश करने के लिये हम कई तरह के व्यवधानहीन तंत्रों का उपयोग करते हैं, जिन्हें संकेत वाहक कहा जाता है। 'जब कोई व्यक्ति स्थिति की परिभाषा की ओर काम करता है और स्वयं के विशिष्ट प्रकार का व्यक्ति होने का अस्पष्ट या खुला दावा करता है तो वह एक तरह से दूसरों पर नैतिक मांग थोपने का काम करता है, क्योंकि ऐसा करके वह उन्हें खुद को उसी तरह महत्व देने या व्यवहार करने के लिये बाध्य करता है जिस तरह वास्तव में उस तरह के व्यक्ति को प्राप्त होना चाहिये।' (गॉफमैन, 1959:24) 'अच्छा प्रभाव डालने के प्रयास के दौरान यह अनिवार्य हो जाता है कि आप स्वयं को ऐसे सर्वश्रेष्ठ संभावित तरीके से प्रदर्शित करें जैसा अधिकर लोग करते हैं।' लोगों की पहली राय इस बात पर तय होगी कि आप कैसे दिख रहे हैं। हम जिस तरह के कपड़े पहनते हैं या जिस खास स्टाइल में खुद को लोगों के सामने पेश करते हैं उससे लोग यह राय बनाते हैं कि हम किस तरह के इंसान हो सकते हैं।

उदाहरण के लिये– हम एक स्टीरियो खरीदना चाहते हैं तो इस दौरान सेल्समैन (जो स्थिति की परिभाषा के निर्माण का प्रयास करता है) सलाह देगा कि आपके पास सबसे अच्छा और महंगा उत्पाद होना चाहिये, क्योंकि उसके अनुसार आप अच्छी चीजें पसंद करने वाले व्यक्ति लगते हैं, वहीं आप ऐसी स्थिति परिभाषा निर्माण कर रहे होते हैं, जिसके अनुसार भले ही आप को अच्छी चीजें पसंद हों, लेकिन आपको अपनी जेब का भी ख्याल रखना है, इसके बावजूद आप ऐसा नहीं दिखाना चाहते हैं कि आप बहुत सस्ती चीज खरीदने वाले व्यक्ति हैं। ऐसे में अलग–अलग परिस्थितियों में अभिनेताओं के बीच एक तरह की संघर्ष की स्थिति बन जाती है। इसी तरह एक अच्छा सेल्समैन आपके सामने यह प्रदर्शित करने का पूरा प्रयास करेगा कि वह वास्तव में कोई ऐसा सेल्समैन नहीं है, जो सिर्फ फायदे की चिंता करता हो, बल्कि उसे यह भी मालूम है कि अपने जानने वाले लोगों के साथ उसे किस तरह अच्छा व्यवहार रखना है। दूसरी ओर, आप इस तथ्य से अच्छी तरह वाकिफ हैं कि वह एक सेल्समैन है और आप इसलिये उसे अपने बारे में अधिक जानकारियां देने से बचते हैं कि कोई उत्पाद पसंद आने पर ये जानकारियां मोलभाव करते वक्त आपके खिलाफ नहीं चली जायें। इस तरह की परिस्थिति को संभालने की कोशिश में हम प्रभाव प्रबंधन करते हैं, जिसे गॉफमैन संकेतवाहक कहते हैं। उनके अनुसार इसमें हमारी भाषा और शारीरिक हावभाव शामिल हैं। हम अपने भावों से छाप छोड़ते हैं। हालांकि, वह ये तर्क भी देते हैं कि

हमारे भाव हमारी अभिव्यक्ति के तत्व हैं, जिन पर हमारा कम नियंत्रण होता है, क्योंकि लोग सामाजिक नियमों और मूल्यों से बंधे होते हैं।

हम किस भाव को किस सन्दर्भ में सामने रखते हैं यह अधिकतर सामाजिक नियमों से निर्धारित होता है और विभिन्न सामाजिक भूमिकाओं के निर्वहन के दौरान हमारे पास वास्तव में अधिक विकल्प नहीं होते हैं। अभिनय की सफलता अभिनेता और दर्शक–श्रोता दोनों की भागीदारी पर निर्भर करती है। रहस्यवाद किसी अभिनेता द्वारा अपनायी जाने वाली वह तकनीक है, जो अभिनेता और दर्शकों के बीच संपर्क में दूरी या प्रतिबंध को बनाये रखता है। यह सामाजिक दूरी दर्शकों द्वारा अभिनय पर उठाये जाने वाले सवालों या चुनौतियों को प्रतिबंधित कर अभिनय में सामने आने वाली बाधाओं को दूर रखने में मददगार साबित होती है।

बॉक्स 5.2: हरबर्ट ब्लूमर द्वारा नाटकीय दृष्टिकोण का आलोचनात्मक मूल्यांकन:

ब्लूमर द्वारा 'ऑफ रिलेशन्स इन पब्लिक' में गॉफमैन के दृष्टिकोण की समीक्षा में गहन समालोचना नजर आती है। गॉफमैन की पुस्तक और कार्य दोनों की सराहना करने के साथ ब्लूमर इस दृष्टिकोण की कुछ खास कमजोरियों को भी उजागर करते हैं। यहां यह बात ध्यान में रखी जानी चाहिये कि एच.जी. ब्लूमर संभवतः शिकागो स्कूल के रूप में प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के सर्वश्रेष्ठ समकालीन प्रतिपादक हैं और यह उनके लिये भी प्रासंगिक है जो गॉफमैन को सामान्यतः प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद और विशेषकर शिकागो स्कूल के समान मानते हैं।

ब्लूमर ने जो कमजोरियां पायी हैं, उनका आधार गॉफमैन द्वारा अध्ययन के लिये मानव समूह क्षेत्र का संकीर्ण दायरा है। वह बताते हैं कि गॉफमैन ने क्षेत्र को आमने–सामने की भागीदारी तक सीमित करते हुये इस भागीदारी के बाहर होने वाली मानवीय गतिविधियों पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया है। इसके अलावा उन्होंने आमने–सामने भागीदारी के अध्ययन को व्यक्तिगत स्थिति की परस्पर क्रिया तक ही सीमित रखते हुये इस बिंदु की अनेदखी की है कि प्रतिभागी क्या कर रहे हैं।

यह दृष्टिकोण मानवीय परस्पर क्रियाओं की वास्तविक मौलिक सामग्री, खास तौर पर इन परस्पर क्रियाओं के अभिव्यंजक स्वरूपों की अनदेखी करता है। इसके चलते परिणाम में मिलने वाली मानव परिस्थिति की छवि आंशिक और खंडित होती है। ब्लूमर यह भी तर्क देते हैं कि इस तथ्य को कमतर किये बिना कि मानव एक–दूसर की मौजूदगी में इस बात को लेकर संवेदनशील होते हैं कि उन्हें किस तरह देखा–समझा जा रहा है, यह मान लेना दूर की कौड़ी है कि आत्मजागरूकता का यह रूप स्वयं को संभालने में व्यक्तियों की चिंता का विषय है। कहने का तात्पर्य यह है कि नाटकीय दृष्टिकोण उस स्थूल जगत की उपेक्षा करता है, जिसके भीतर नाटकीयता के सूक्ष्मस्तरीय सरोकार निहित हैं (विलियम्स 1986: 350–351)

5.5.3 भौतिक व्यवस्थाः मंच

गॉफमैन के सैद्धांतिक ढांचे में भौतिक व्यवस्था (यानी जहां कोई भूमिका निभायी जानी है), वास्तविक परिस्थितियों में प्रभाव प्रबंधन के तरीकों को समझने में प्रासंगिक है। उदाहरण के लिये– एक उच्चस्तरीय कॉरपोरेट अधिकारी अपेक्षा करता है कि उसका दफ्तर उसके अधीनस्थ कर्मचारियों के बीच छोटे कमरे जैसा नहीं, बल्कि अच्छी तरह से सुसज्जित कार्यालय हो। इस तरह नाटकीयता में उस व्यवस्था की भी चिंता की जाती है, जिसमें लोग अपनी भूमिकाएं निभाते हैं और जिसे परिस्थिति की सामान्य सामाजिक परिभाषा के नियंत्रण की उनकी कोशिश के तौर पर देखा जा सकता है (जॉनसन 2008: 121), हर मंच के दो पहलू होते हैं, एक है वास्तविक मंच जहां दर्शकों के सम्मुख वास्तविक अभिनय किया जाता है और दूसरा है नेपथ्य जहां अभ्यास और तैयारी की जाती है। 'सम्मुख' किसी व्यक्ति के अभिनय का वह हिस्सा है जो आमतौर पर और एक निश्चित तरीके से परिस्थिति को परिभाषित करने के लिये नियमित उन लोगों के सामने किया जाता है, जो अभिनय का परीक्षण करने वाले हैं। दूसरी ओर, 'नेपथ्य' वह है, जहां अनौपचारिक व्यवहार देखा जाता है। जीवन में भी दो क्षेत्र होते हैं, दोनों के अपने अपने व्यावहारिक नियम हैं। उदाहरण के लिये– किसी दंपति में कभी झगड़ा हो तो वे एक–दूसरे का नाम लेकर ऊंची आवाजों में चिल्लाने लगते हैं, लेकिन ज्यों ही उनके बच्चे घर लौटते हैं वे स्वतः अपने अच्छे स्वरूप में लौट आते हैं और एक दूसरे से इस तरह खुशनुमा तरीके से बातचीत करने लगते हैं मानो सबकुछ सामान्य रहा हो। यहां उनका यह अभिनय बच्चों के हित में होता है, जो उनके अभिनय के दर्शक होते हैं। निजी स्तर पर दंपति के बीच एक–दूसरे पर गुस्सा दिखाना निश्चित रूप से स्वीकार्य व्यवहार है, लेकिन बच्चों के सामने उनका गुस्सैल रवैया अस्वीकार्य है, इसीलिये वे अकसर प्यारे माता–पिता के रूप में अभिनय करते हैं। यहां दर्शक के रूप में बच्चों की भूमिका भी इसलिये महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि वे माता–पिता द्वारा दिखायी जाने वाली अच्छी छवि को स्वीकार करने का बहाना बनाते हैं, भले ही वे जानते हों कि उनके माता–पिता इससे पहले झगड़ रहे थे। हालांकि, इसका अर्थ यह नहीं है कि गॉफमैन यह मानते हों कि जीवन कुछ निश्चित कथानकों या सांस्कृतिक अनुशंसाओं पर ही आधारित है, बल्कि वह मानते हैं कि जीवन प्रकृति में अत्यधिक गतिशील और अभिनययोग्य है। ये अभिनय हमेशा भावनाओं से भरे होते हैं।

गतिविधि 1

ऐसी परिस्थितियों का रिकॉर्ड तैयार करें, जहां लोग अपनी अच्छी छवि प्रदर्शित करने या स्वयं को जैसे हैं वैसा ही दिखाने के बीच दुविधा में पड़ जाते हों।

गॉफमैन के अनुसार स्वयं को समाज के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिये व्यक्ति आमतौर पर तीन चीजों– व्यवस्था, प्रस्तुति और व्यवहार या तौर तरीके का उपयोग करता है। व्यवस्था का अर्थ सम्मुख होने के निर्धारित–निश्चित तत्वों से है, जैसे– किसी कमरे का आकार–प्रकार और इससे जुड़े अन्य उपकरण या संसाधन। दूसरों के सामने अपनी छवि के निर्माण में प्रयुक्त होने वाले संसाधनों में सर्वाधिक उपयोगी हैं संकेत वाहक। ये हमारे हावभाव, संवाद के तरीकों और सामाजिक

व्यवस्था के चयन को भी निर्धारित या नियंत्रित करते हैं। प्रस्तुति का अर्थ उन चीजों से है, जिन्हें हम स्वयं व्यक्ति के साथ सबसे अधिक निकटता से जोड़कर देखते हैं, जैसे– उसकी जातीय पृष्ठभूमि, उम्र उकसे कपड़े और वे चीजें जिन्हें वह अपने साथ लेकर चलता है या इर्दगिर्द रखता है। तौरतरीकों या व्यवहार का अर्थ किसी व्यक्ति के आत्मविश्वास, अधिकारिता, विनम्रता आदि गुणों के प्रदर्शन से है। हम सामान्यतः अपेक्षा करते हैं कि इन तीनों के बीच निरंतरता बनी रहे, लेकिन ऐसा हमेशा हो नहीं पाता है। इसी तरह नाटकीय दृष्टिकोण में उपकरण या संसाधन भी महत्वपूर्ण होते हैं। किसी नाटक में उपकरण अभिनीत किये जाने दृश्य को प्रामाणिक बना देते हैं। ये नाटकीय दृश्य निर्माण में मददगार होते हैं। मंच पर किसी छात्र की पहचान किताबों, स्कूल बैग से की जा सकती है। इसी तरह वास्तविक जीवन में भी उपकरण या संसाधन महत्वपूर्ण होते हैं। उदाहरण के लिये– स्टेथोस्कोप बताता है कि इसे पहनने वाले का पेशा चिकित्सक है। इसी तरह किसी विश्वविद्यालय में प्राध्यापक के कार्यालय में रखी गयी किताबों (उसी विषय की, जिसे वह पढ़ाता हो) की बड़ी संख्या यह छवि बनाती है कि प्राध्यापक को अपने विषय में महारत हासिल है। भले ही उसके घर में किताबों से अधिक पेंटिंग या कलाकृतियां हो सकती हैं जो बताती हों कि वह कितना कलाप्रेमी है। इस स्थिति में घर की व्यवस्था उस प्राध्यापक के लिये नेपथ्य का काम करती है। नेपथ्य उस भौतिक व्यवस्था में होता है, जहां हम मानते हैं कि हमारे लक्षित दर्शक हमें नहीं देख पा रहे हैं। सम्मुख मंच और नेपथ्य में हमारे अभिनय में अंतर ही वह कारण है, जिसके चलते हमें अभिनेता माना गया है और सम्मुख मंचस्थल में हम नाटकीय विश्लेषण का उपयोग कर सकते हैं। जब हम सम्मुख मंच पर होते हैं, हम अपनी अभिनय क्षमता का परीक्षण करते हैं और दर्शकों को यह दिखाने की कोशिश करते हैं कि हम स्वयं को कितने बेहतर ढंग से प्रस्तुत कर सकते हैं। हमारी प्रतिष्ठा और विश्वसनीयता इस पर निर्भर करती है कि हमने कितना अच्छा अभिनय किया है। दूसरों के सामने जिस छवि को हम उपयुक्त मानते हैं, हम कोशिश करते हैं कि वह छवि स्थायी और सतत बनी रहे। वहीं, नेपथ्य में हम अपने उन पहलुओं को भी अभिव्यक्त कर पाते हैं जो विशेष दर्शकों या श्रोताओं के लिये अस्वीकार्य हो सकता है।

बोध प्रश्न 2

1. निम्न कथन सत्य हैं या असत्यः

   अ) 'प्रजेंटेशन ऑफ सेल्फ इन एवरीडे लाइफ' पुस्तक के लेखक इरविंग गॉफमैन हैं।

   ब) सम्मुख मंच में अभिनेता स्वयं का वास्तविक रूप प्रदर्शित करते हैं।

   स) नाटकीयता का संबंध वृहद सामाजिक सिद्धांतों से है, क्योंकि यह दैनिक जीवन में संवाद या अंतःक्रियावाद प्रक्रिया पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करता है।

2 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो पंक्तियों में दें:

   अ). प्रभाव प्रबंधन से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

ब) सम्मुख मंच और नेपथ्य में अंतर को स्पष्ट कीजिये।

.....

.....

.....

.....

गतिविधि 2

किसी ऐसी स्थिति के बारे में विचार करें जहां आपकी सहभागिता रही हो या आपको मालूम हो कि उसमें सम्मुख मंच और नेपथ्य क्या हो सकते हैं, इस परिस्थिति का इस तरह समाजशास्त्रीय विश्लेषण करें कि दोनों अवधारणाओं को परिभाषित करे और यह परीक्षण करें कि किस तरह ये दोनों व्यवस्थाएं हर व्यवस्था में अभिनय के प्रकारों के विश्लेषण का कार्य करती हैं और अभिनयों के बीच क्या संबंध होता है।

5.7 सारांश

इरविंग गॉफमैन ने अपनी पुस्तक 'प्रजेंटेशन ऑफ सेल्फ इन एवरीडे लाइफ' में दैनिक जीवन में व्यक्तियों के परस्पर संवाद के महत्व और बारीकियों को समझाने के लिये रंगमंच के रूपक का प्रयोग किया है। गॉफमैन का अंतःक्रियावाद सिद्धांत मंच, भूमिकाएं निभाते अभिनेताओं, विभिन्न उपयोगी उपकरणों–संसाधनों की छवि उभारते हुये सामाजिक जीवन के नाटकीय मॉडल को पेश करता है। यहां दर्शक दूसरे लोग होते हैं जो किसी अभिनेता के अभिनय का परीक्षण करते हैं और प्रतिक्रिया देते हैं। रंगमंचीय अभिनयों की तरह ही सामाजिक संवादों में भी सम्मुख मंच और नेपथ्य की व्यवस्था देखी जा सकती है। सम्मुख क्षेत्र वह है, जहां अभिनेता दर्शकों के सामने होता है, इस काल्पनिक क्षेत्र में अभिनय के दौरान अभिनेता अपने दर्शकों के प्रति अधिक गंभीर और सजग होते हैं तथा दर्शकों के प्रति अपने व अपने प्रति दर्शकों के व्यवहार की निरंतर निगरानी करते हैं। वहीं, नेपथ्य में अभिनेता अभिनय और दूसरों के सामने प्रस्तुत की जाने वाली भूमिका या पहचान से छुटकारा पाकर स्वयं बने रह सकते हैं। गॉफमैन की पुस्तक और सिद्धांत का केंद्रबिंदु यह विचार है कि लोग सामाजिक व्यवस्था में परस्पर जिस तरह संवाद करते हैं, उसके जरिये वे प्रभाव प्रबंधन की प्रक्रिया से निरंतर जुड़े रहते हैं। यह वह तकनीक है, जिसमें हर कोई अपने को इस तरह प्रस्तुत करने और व्यवहार करने की कोशिश करता है जो उसे दूसरों के सामने शर्मिंदगी नहीं होने दे। यह प्राथमिक रूप से दर्शक और अभिनेता दोनों द्वारा की जाने वाली

प्रक्रिया है, जो यह सुनिश्चित करती है कि सभी पक्षों की परिस्थिति की परिभाषा एकसमान ही है। यानी, सभी को मालूम होता है कि किसी परिस्थिति में क्या हो सकता है और इस परिस्थिति से संबद्ध लोगों से क्या अपेक्षा की जानी चाहिये।

5.7 सन्दर्भ

Fine, G. A., & Manning, P. (2003). *Erving Goffman. The Blackwell Companion to Major Contemporary Social Theorists*, 34-62.

Goffman, E. (1959) *The Presentation of Self in Everyday Life*, London: Penguin Group.

Ransome, P 2010 Social Theory, UK: The Polity press

Johnson (2008) *Contemporary Sociological Theory: An Integrated Multi-Level Approach*, USA: Springer.

Williams, Simon Johnson "Appraising Goffman", *The British Journal of Sociology*, Vol. 37, No. 3 (Sep., 1986), pp. 348-369. Wiley on behalf of The London School of Economics and Political Science. http://www.jstor.org/stable/590645, Accessed: 15-01-2018 18:15 UTC

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. गॉफमैन का नाटकीय मॉडल दैनिक अंतःक्रियावाद प्रक्रिया का एक रूपक विश्लेषण है। इस मॉडल के अनुसार हमारा जीवन रंगमंच की तरह ही अभिनयों की एक श्रृंखला के तौर पर देखा जा सकता है। यहां अभिनय इस तरह किया जाता है कि दर्शक (जो अभिनय के परीक्षक भी होते हैं) अपने सम्मुख किये जा रहे अभिनय पर विश्वास करें। अंतःक्रियावादी परिस्थितियों में भी रंगमंचीय अभिनय में उपयोग किये जाने वाले उपकरणों की तरह ही रूपकीय उपकरणों–संसाधनों की मदद से अभिनय किया जाता है।

2. स्व के नाटकीय प्रस्तुतीकरण की प्रक्रिया व्यक्ति के उन प्रयासों को कहा जा सकता है, जिनके जरिये वह दूसरों की नजरों में अपनी छवि निर्माण और नियंत्रित करता है।

बोध प्रश्न 2

1, अ) सत्य

ब) असत्य

स) असत्य

2, अ) गॉफमैन ने प्रभाव प्रबंधन शब्द का इस्तेमाल हमारी उस इच्छा को स्पष्ट करने के लिये किया, जिसमें हम सम्मुख मंच पर अपने प्रति दूसरों के प्रभाव को नियंत्रित करना चाहते हैं। गॉफमैन के अनुसार हम सामाजिक

व्यवस्था, प्रस्तुतीकरण और संवाद के तौरतरीकों जैसे विभिन्न तंत्रों के जरिये दूसरों के सामने स्वयं को प्रस्तुत करते हैं।

2, ब) सम्मुख मंच वह है, जहां हमारी गतिविधियों को दर्शक देख सकते हैं और ये हमारे अभिनय का हिस्सा होती हैं। नेपथ्य का अर्थ उस व्यवस्था से है जहां व्यक्ति दर्शकों को नजर नहीं आता है और यहां वह वही बना रहता है, जो वह वास्तव में है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY